विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

खतरनाक है एंटीबायोटिक दवाओं का बेजा इस्तेमाल

आजकल एंटीबायोटिक दवाओं का इस्तेमाल ज्यादा बढ़ रहा है। कोरोना के बाद यह दवा घर घर में मिल जाएगी। एंटीबायोटिक मूलत: एक ग्रीक शब्द है, जो एंटी और बायोस की संधि से बना है। इसमें एंटी का मतलब होता है विरोध और बायोस का अर्थ है जीवाणु यानी बैक्टीरिया। अत: एंटीबायोटिक का मतलब हुआ बैक्टीरिया का विरोध करने वाला। एंटीबायोटिक जीवाणुओं के विकास को रोक देती है और बैक्टीरिया के संक्रमण को रोककर उपचार संभव बनाती है। एंटीबायोटिक सूक्ष्म जीवों से होने वाले संक्रमण से शरीर की रक्षा करती है।

असल में एंटीबायोटिक दवाइयां हमारे देश में लगभग हर मेडिकल स्टोर पर बिकने वाली आम दवाओं में से एक हैं। हालाँकि यह दवा डॉक्टरी पर्चे पर दी जानी चाहिए मगर देखा गया है दुकानदार इसे बिना समुचित पर्ची के लोगों को दे देते है। हमारे देश में लोग मामूली बीमारियों के इलाज के लिए डॉक्टर के पास नहीं जाते। वे केमिस्ट से दवाई ले लेते हैं। कुछ लोग कई दवाओं के बारे में जानते हैं कि ये किस बीमारी को ठीक करती है और उसी हिसाब से दवाई ले लेते हैं। लेकिन उन्हें इन दवाइयों के साइड इफेक्ट के बारे में पता नहीं होता। बिना डॉक्टर की सलाह के ये दवाइयां जरूरत से ज्यादा लेने के बाद ये शरीर में रेसिस्टेंस यानी प्रतिरोध पैदा कर लेती हैं। इसके बाद इनका कोई असर नहीं होता।

रोजाना की दौडती-भागती जिंदगी में लोग सरदर्द, पेटदर्द, सर्दी, खांसी या बुखार होने पर एंटीबायोटिक दवा ले लेते हैं। बहुत से लोग बिना किसी डॉक्टर की सलाह के भी इनका इस्तेमाल करने लगे हैं। यह सेहत के लिए नुकसानदायक है। एंटीबायोटिक दवाओं का अंधाधुंध उपयोग किस प्रकार हमारे स्वास्थ्य को हानि पहुंचता है इसकी एक भयावह जानकारी हमारे सामने आयी है। इस रिसर्च में बताया गया है कि सबसे ज्यादा एजिथ्रोमाइसिन दवा का उपयोग किया गया। ये 500 एमजी की एक टैबलेट होती है। जो एंटीबायोटिक का काम करती है। देश में करीब 8 प्रतिशत लोगों ने इस दवा का सेवन किया था। एक रिपोर्ट में बताया गया कि भारत में एंटीबायोटिक का सेवन हर दशक में 30 प्रतिशत तक बढ़ जाता है।

दुनिया में भारत एंटीबायोटिक दवाओं के सबसे बड़े उपभोक्ताओं में से एक है। एंटीबायोटिक प्रतिरोध के प्रति बढ़ती चिंता पर हेल्थ विशेषज्ञों का कहना है, अधिकांश भारतीय सोचते हैं कि एंटीबायोटिक दवाएं सामान्य सर्दी और गैस्ट्रोएन्टेरिटिस जैसी बीमारियों का इलाज कर सकती हैं जबकि यह गलत धारणा है।

एंटीबायोटिक्स का सबसे ज्यादा इस्तेमाल की जाने वाली दवा बनकर सामने आयी है। इसकी मुख्य वजह यह माना जाता है कि मरीज को तुरंत राहत के लिए डॉक्टर ऐसा कर रहें हैं। ऐसी दवाएं दुकानों से आसानी से उपलब्ध हो जाती है और लोग इन्हें खरीद कर रख लेते हैं। विशेषकर कोरोना के दौरान इन दवाओं का बिना दोचे समझे बेहताशा प्रयोग बढ़ा। इन दवाओं से शरीर में एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस हो सकता है, यानी दवाओं का अधिक सेवन होने से ये बाद में असर करना भी बंद कर सकती है।

एंटीबायोटिक का सेवन करने के बाद शरीर को काफी नुकसान होता है। लगातार इस्तेमाल से टीबी जैसी बीमारियां हो सकती हैं। इसी के मद्देनजर अब दुनिया भर में एंटीबायोटिक दवाओं के इस्तेमाल और सेवन के खिलाफ मुहिम छेड़ी गई है। डॉक्टर बताते हैं कि अधिक मात्रा या बिना वजह एंटीबायोटिक दवाओं को लेने से ये दवाएं शरीर के फायदेमंद बैक्टीरिया को भी खत्म कर देती हैं। इससे स्किन पर कई प्रकार के फंगल इंफेक्शन हो जाता है।

एंटीबायोटिक का सेवन करने के बाद शरीर को काफी नुकसान होता है। लगातार इस्तेमाल से टीबी जैसी बीमारियां हो सकती हैं। इसी के मद्देनजर अब दुनिया भर में एंटीबायोटिक दवाओं के इस्तेमाल और सेवन के खिलाफ मुहिम छेड़ी गई है। डॉक्टर बताते हैं कि अधिक मात्रा या बिना वजह एंटीबायोटिक दवाओं को लेने से ये दवाएं शरीर के फायदेमंद बैक्टीरिया को भी खत्म कर देती हैं। इससे स्किन पर कई प्रकार के फंगल इंफेक्शन हो जाता है। कई मामलों में चेहरे पर एलर्जी और दाने निकलने की सम्स्या भी देखी जाती है।

डब्लूएचओ के मुताबिक बिना जरूरत के एंटीबायोटिक दवा लेने से एंटीबायोटिक प्रतिरोध में वृद्धि होती है जो वैश्विक स्वास्थ्य के लिए सबसे बड़े खतरों में से एक है। एंटीबायोटिक प्रतिरोध संक्रमण से मरीज को लंबे समय तक अस्पताल में भर्ती रहने, इलाज के लिए अधिक राशि और बीमारी गंभीर होने पर मरीज की मौत भी हो सकती है। एंटीबायोटिक प्रतिरोध किसी भी उम्र के किसी भी देश में किसी को भी प्रभावित कर सकता है। एंटीबायोटिक प्रतिरोध स्वाभाविक रूप से होता है, लेकिन मनुष्यों और जानवरों में एंटीबायोटिक दवाओं का दुरुपयोग इस प्रक्रिया को तेज कर रहा है। निमोनिया, तपेदिक, सूजाक, और साल्मोनेलोसिस जैसे संक्रमणों की बढ़ती संख्या का इलाज करना कठिन होता जा रहा है क्योंकि उनके इलाज के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एंटीबायोटिक्स कम प्रभावी हो जाती हैं। एंटीबायोटिक प्रतिरोध के कारण लंबे समय तक अस्पताल में रहना पड़ता है, उच्च चिकित्सा लागत और मृत्यु दर में वृद्धि होती है।

एक रिपोर्ट के अनुसार वैश्विक एंटीबायोटिक्स बाजार का आकार 2020 में 40.7 बिलियन अमरीकी डॉलर आंका गया था और 2021 से 2028 तक 4.5 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ने की उम्मीद है। संक्रामक रोगों का बढ़ता प्रसार और सहायक सरकारी कानून इसके प्रमुख चालक हैं बाजार। इसके अलावा, एंटीबायोटिक दवाओं के दुरुपयोग या अत्यधिक उपयोग के कारण एंटीबायोटिक प्रतिरोध संक्रमण में वृद्धि से बैक्टीरिया के संक्रमण के इलाज के लिए नुस्खे के पैटर्न को नए उपचारों में स्थानांतरित करने की उम्मीद है। अमेरिका के रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केंद्र अनुसार, अमेरिका में एंटीबायोटिक-प्रतिरोधी संक्रमणों की घटना 2.8 मिलियन से अधिक है। विकसित देशों में एंटरोबैक्टीरियासी, पी. एरुगिनोसा, और के. न्यूमोनिया जैसे रोगजनकों की उच्च प्रतिरोध दर औसतन 40 प्रतिशत है। भारत में कोरोना काल के दौरान और उससे पहले भारत में एजिथ्रोमाइसिन जैसी एंटीबायोटिक का जरूरत से अधिक इस्तेमाल किया गया। यह दावा द लैंसेट पत्रिका की दक्षिणपूर्व एशिया में में छपी रिपोर्ट में हुआ है।

रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि इनमें से अधिकतर दवाओं को तो सेंट्रल ड्रग रेगुलेटर से मंजूरी भी नहीं दी गई थी। रिपोर्ट में कहा गया है कि लोगों ने एजिथ्रोमाइसिन 500 एमजी टैबलेट और इफिक्सिम 200 एमजी टैबलेट खूब खाईं। कोविड-19 नेशनल टास्क फोर्स ने कोरोना से संक्रमित मरीजों के लिए नई गाइडलाइंस जारी कर दी है। उसमें उन दवाओं के प्रयोग की सलाह नहीं दी गई है। जिन दवाओं का पहले कोरोना महामारी में इस्तेमाल किया गया था।

सरकार ने एंटीबायोटिक दवाओं के बारे में कहा है कि बिना जांच के इन दवाओं का इस्तेमाल न करें।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

भाषा और मनुष्य के मस्तिष्क का अंतरंग संबंध होता है

डॉ. रामावतार शर्मा

भाषा मात्र जीभ के घुमाव से प्रकट हुई ध्वनियों की श्रृंखला नहीं है। भाषा मस्तिष्क की एक सजीव क्रिया है जो मस्तिष्क के कई अंशों को संरचनात्मक तौर पर प्रभावित करती है यानि उनके निर्माण में सहायक होती है। भाषा और संवाद जीवन के लिए उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितना भोजन और पानी क्योंकि भाषा के द्वारा ही हम विश्व के संपर्क में रहते हैं, जीवन में नाते रिश्ते बनाते हैं, कला और रचनात्मकता का विकास होता है, सूचनाओं तथा ज्ञान का आदान-प्रदान करते हैं। भाषाओं को लेकर जो राजनीतिक और धार्मिक विवाद हम देखते हैं वह निरर्थक और स्वार्थ प्रेरित होता है क्योंकि यदि आपको अपने मस्तिष्क को विकसित करना है, लोगों से भावनात्मक रूप से जुडना है तो अपनी क्षमता और समयानुसार जितनी हो सके उतनी भाषाएं सीख लेनी चाहिएं।

हमारे मस्तिष्क का एक हिस्सा होता है जिसे ब्रोका का हिस्सा कहा जाता है। डॉक्टर ब्रोका ने इसे ढूंढ कर बताया कि मस्तिष्क के इस हिस्से में उन क्रियाओं का प्रसंकरण (प्रोसेसिंग) होता है जिनके द्वारा हम शब्दों और वाक्यों का उच्चारण करते हैं। इसी तरह से वॉर्निक क्षेत्र होता है जो भाषा के गूढ़ वाचन (डीकोडिंग) का कार्य करता है। इस तरह से हम देखते हैं कि भाषा का सीखना, समझना, रचनात्मक उपयोग करना एक जटिल और लगातार विकसित होने वाला गुण है जो आपके व्यक्तित्व के साथ आपके मस्तिष्क को भी विकसित करता है। भाषा ज्ञान एक बेशकीमती रत्न है जिसको धर्म, संस्कृति, जाति, देश या प्रदेश से जोड़ना ओछे विचार से अधिक कुछ नहीं है। लगातार हो रहे वैज्ञानिक अध्ययन भी बता रहे हैं आप जितनी तरह के विभिन्न भाषाओं के शब्द, वाक्य या स्वयं भाषा सीखते हो आपका मस्तिष्क उसी के अनुरूप विकसित होता है, उसमें तंतुओं की नवरचना होती है।

आधुनिक अध्ययन बताते हैं कि विभिन्न देशीय या स्थानीय भाषा बोलने वाले लोगों के मस्तिष्क के विभिन्न स्थानों पर परिवर्तन होते हैं। एक व्यापक अनुसंधान किया गया जहां पर जर्मन और अरबी मातृभाषा बोलने वाले लोगों के मस्तिष्क का एम आर आई द्वारा गहन अध्ययन किया गया। इसमें भाषाओं के बारे में कुछ उपयोगी बातें ध्यान में रखी गई थी। भाषा मुख्यतया बाएं मस्तिष्क द्वारा नियंत्रित होती है। भाषा एक तो अर्थ प्रधान (सेमांटिक) होती है और दूसरे वाक्य विन्यास प्रधान (सिंटैक्स) होती है। अर्थ प्रधान में शब्दों का मतलब क्या होगा इसकी प्रधानता होती है जबकि वाक्य विन्यास में व्याकरण का उपयोग होता है जहां पर वाक्य रचना प्रमुख होती है। भाषा का तीसरा पक्ष फोनोलॉजी (ध्वनि विज्ञान) होता है जिसमें भाषा को कैसे बोला जाता है और उस बोलने के तरीके से शब्दों के अर्थ निकलते हैं।

अर्थ प्रधान और वाक्य विन्यास मुख्य रूप से बाएं मस्तिष्क और ध्वनि तथा स्वरोचारण या तो दाएं या फिर दाएं तथा बाएं दोनों मस्तिष्क गोलार्ध (हेमी स्फीयर) द्वारा एक साथ प्रसंकरित यानि प्रोसेस होते हैं। धरती पर कोई 7000 तरह की भाषाएं बोली जाती हैं जिनमें उपरोक्त मस्तिष्क क्षेत्र प्राथमिक भूमिका निभाते हैं। परंतु बात सिर्फ यहीं समाप्त नहीं होती है।

कई विशिष्ट भाषाओं में लिखने के तरीके, बोलने के अंदाज, शब्दों की आवाज, वाक्यों की संरचना आदि के कारण मस्तिष्क में कई सूक्ष्म परिवर्तन होते हैं। भाषा सीखने और बोलने के प्रयासों की प्रक्रिया में तंत्रिका तंत्र (नर्व सिस्टम) नव निर्माण होने लगता है यानि मस्तिष्क के कुछ विशिष्ट भागों का आकार बढ़ जाता है जिसके फलस्वरूप कई तरह की बीमारियों के होने की संभावनाएं कम हो जाती है जिनमें अल्जाइमर, पार्किंसन, मनोभ्रंश (डिमेंशिया) आदि शामिल हैं।

उपरोक्त उम्र के हिसाब से प्रकट होने वाली बीमारियां मस्तिष्क की कोशिकाओं की शक्ति में कमी होने से होती है। भाषा के शब्दों की विविधता, लिखने की शैली और बोलने के अभ्यास से इन कोशिकाओं की शक्ति बनी रहती है। उदाहरण के तौर पर अंग्रेजी भाषा में नीले स्पेक्ट्रम के रंगों का एक ही नाम होता है परंतु रशियन भाषा में हल्के और गहरे नीले रंगों के अलग-अलग नाम होते हैं। पाया गया है कि बचपन ने हर बच्चे को देशीय यानि नेटिव भाषा का अच्छा ज्ञान करवाना चाहिए और आगे चलकर अन्य भाषाओं में भी दक्षता की कोशिश होनी चाहिए ताकि मस्तिष्क का बेहतर विकास हो सके। इसी तरह चीनी और अंग्रेजी में सफेद और भूरे रंग के विभिन्न गहरेपन को अलग-अलग तरीके से उच्चारित किया जाता है। इस तरह की विभिन्न भाषाएं यदि सीखी जाएं तो मस्तिष्क सदैव उत्साहित रहता है।

इसका एक बेहतरीन उदाहरण जर्मन और अरबी भाषा हो सकते हैं। अरबी को दाएं से बाएं लिखा जाता है जबकि जर्मन को बाएं से दाएं लिखा जाता है। अरब यहूदी उत्पति की भाषा है जबकि जर्मन इंडो जर्मन भाषा है। जर्मन एक जटिल व्याकरण आधारित भाषा है जबकि अरबी मुख्यतया उच्चारण आधारित होती है। अरबी शब्द छोटे स्वरों (वॉवेल) को छोड़ देते हैं जबकि जर्मन में उनका बेहतरीन उपयोग होता है। अरबी में शब्द किस संदर्भ में बोला गया है उस पर उसका मतलब और उच्चारण निर्भर करता है। इस तरह से एम आर आई में पाया गया कि दोनों भाषाएं मस्तिष्क को अलग तरीके से विकसित करती हैं और यदि कोई व्यक्ति इन दोनों भाषाओं का जानकार है तो उसका मानसिक स्वास्थ्य अन्य लोगों से बेहतर होता है।

हम लोग अकसर भाषा के पक्ष या विरोध में आंदोलन होते देखते हैं। सत्ता पर आसीन या उस आसन तक पहुंचने को प्रयासरत लोग कभी नहीं चाहेंगे कि जनता का बहुमत गहन विश्लेषण करने में सक्षम हो। सत्ता के नियंत्रक सदैव ही जागरूक और शिक्षित लोगों के प्रति हेय भाव रखे हुए होते हैं। उनकी नजर में बुद्धिजीवी व्यक्ति समाज का कंटक होता है और राष्ट्रप्रेम से खाली होता है। भाषाएं चूंकि बुद्धि विकास करती हैं तो लोगों को एक ही भाषा तक सीमित रखना सत्ता नियंत्रकों के लिए हितकारी होता है। चीन, सऊदी अरब, ईरान और रूस जैसे देश अपने लोगों को अपनी भाषा तक सीमित रहने को प्रेरित करते हैं। फ्रांस में फ्रेंच और स्पेन में स्पेनिश के अलावा दूसरी भाषा जैसे इंग्लिश बोलने वालों को हेय दृष्टि से देखा जाता है।

वैज्ञानिक नजरिए से देखा जाय तो स्थानीय भाषा का वृहद ज्ञान होना चाहिए। ऐसा करना मानसिक क्षमता को बढ़ाता है परंतु यहां व्यक्ति को अपनी शब्दावली का विस्तृत ज्ञान होना चाहिए। यदि हम हिंदी की बात करें तो पाएंगे कि भारत के हिंदी भाषी बहुमत की शब्दावली बहुत सीमित है। जिस भाषा में 150,000 शब्द शामिल है वहां लोग 200-400 शब्दों के अलावा अन्य शब्दों का ना तो अर्थ जानते हैं और न ही शब्दावली बढ़ाने को उत्सुक हैं। ऐसे में भाषा से विकसित होने वाले मस्तिष्क के क्षैत्र हीन पड़ जाते हैं। मातृभाषा सीखने की ललक बुद्धि को विकसित करती है यह सर्वविदित तथ्य है परंतु हर विकासोन्मुख व्यक्ति को दो या अधिक भाषाओं को सीखने का प्रयास करना चाहिए। बाएं से दाएं लिखी जानेवाली हिंदी और अंग्रेजी के अलावा दाएं से बाएं लिखी जाने वाली अरबी, उर्दू या हिब्रू एक अच्छा मिश्रण हो सकता है। इसके अलावा विविधता वाले देश भारत में तमिल, मलयालम, तेलगु या मराठी या बंगला भाषा को सीखना बुद्धि विकास के लिए बेहतर हो सकता है। परंतु सिर्फ भाषा सीखने से काम चलने वाला नहीं है, उस भाषा के साहित्य से भी कुछ संबंध होना चाहिए। राजनीतिक नारेबाजी में सामान्य नागरिक को कुछ नही मिलने वाला है। ज्ञान और जानकारी ही मनुष्य को दरिद्रता से बाहर निकालने में सक्षम हैं और इसमें धन और बुद्धि दोनों की दरिद्रता शामिल हैं।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

विश्वकर्मा मातृशक्ति सम्मान समारोह में 30 महिलाएं सम्मानित

विश्वकर्मा मातृशक्ति सम्मान समारोह में प्रतिभायें सम्मानित हुई।

चौमूं/कालाडेरा, (निसं)। शुक्रवार को अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा के प्रदेशसभा भवन में जांगिड़ समाज के महिला प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों के तत्वावधान में विश्वकर्मा मातृशक्ति सम्मान समारोह का आयोजन हुआ।

कार्यक्रम में सामाजिक कल्याण विभाग राजस्थान सरकार की अध्यक्षा अर्चना शर्मा के द्वारा जांगिड़ समाज की लगभग 30 प्रतिभावान महिलाएं को स्मृति चिन्ह देकर व शाल औढ़ाकर सम्मान किया गया। जांगिड़ समाज की ये महिलाएं अपनी प्रतिभा का लोहा देश और विदेश में मना रही है। समाज की महिला शक्ति को आगे लाने के लिए निरंतर प्रयास भी कर रही है। जिन महिलाओं का सम्मान किया गया है वो महिलाएं वर्तमान में उद्योगपति, आरएएस, डॉक्टर, आरपीएस, इंजीनियर, वैज्ञानिक, समाजसेवी, लेखिका सहीत अन्य पदों को सुशोभित कर रही है वही समाज के उत्थान में उत्कृष्ट कार्य भी कर रही है। कार्यक्रम के दौरान समाज की अनेक मातृशक्ति उपस्थित थी।

पैंथर ने बाड़े में बंधी बकरियों का शिकार किया

पावटा, (निसं)। पंचायत समिति के ग्राम पंचायत पांछूडाला के गांव सुन्दराला में पैंथर के खौफ से ग्रामीणों की नींद उड़ी हुई है। यहां पिछले पंद्रह दिनों से एक पैंथर आबादी क्षेत्र में आकर पालतू पशुओं का शिकार कर रहा है जिसके कारण ग्रामीणों में दहशत का माहौल बना हुआ है।

ग्राम पंचायत पांछूडाला के गांव सुन्दराला में शुक्रवार को पैंथर ने 13 फीट ऊंची दीवार को फांदकर बांड़े में बंधी बकरियों को शिकार बना डाला। वहीं वन विभाग कि लापरवाही के कारण ग्रामीणों में विभाग के अधिकारियों के प्रति रोष व्याप्त है। लोगों का कहना है कि पिछले पंद्रह दिनों में अनेक बार पैंथर के हमले के बावजूद भी विभाग की ओर से कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। अधिकारियों के उदासीन रवैए के कारण लोगों ने विभाग के बाशिंदों के प्रति नाराजगी जताई है।

ग्रामीण मुकेश राव ने बताया कि उनके पशुबाड़े कि दीवार फांदकर पैंथर ने पिछले पंद्रह दिनों में चार बार मवेशियों पर हमला कर उनका शिकार कर चुका है। बताया कि पंद्रह दिनों पहले वन विभाग के अधिकारियों को अवगत करवाया गया लेकिन कोई कार्रवाई होने के कारण पैंथर निरन्तर पालतू पशुओं का शिकार कर रहा है। मुकेश ने बताया कि उनके पशुबाड़े कि दीवार फांदकर पैंथर ने चार अप्रैल को छह बकरियों का शिकार किया, वहीं सात अप्रैल को दो बकरियों का शिकार किया, वहीं गुरुवार रात को फिर से पैंथर ने 8 बकरियों को मौत के घाट उतारा व दस बकरियां हमले में घायल हो गई।

ग्रामीण जयराम जाट, विकास कुमार, कुलदीप जाट, लालचंद जाट, शीम्भूदयाल जाट, कैलाश जाट, शीशराम जाट, नरेश थालोड़, रामकरण जाट व अन्य कई लोगों ने विरोध प्रदर्शन कर कार्रवाई करने की मांग रखी। क्षेत्रीय वन अधिकारी कोटपूतली सीताराम यादव का कहना है कि पीड़ित का मकान वन विभाग कि सीमा से सटे होने के कारण हादसे का शिकार बन रहा है। वहीं पैंथर को पकड़ने के लिए पिंजरा लगवा दिया गया है तथा घटना का मौका मुआयना कर लिया है। पीड़ित को जो भी नुकसान झेलना पड़ा है उसका जल्द से जल्द ही मुआवजा दिलाने के लिए हम प्रतिबद्ध है।

राशिफल शनिवार 15 अप्रैल, 2023

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2080, श्रवण नक्षत्र प्रात: 7:35 तक, साध्य योग प्रात: 6:31 तक, वणिज करण प्रात: 10:00 तक, चन्द्रमा सांय 6:43 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मिथुन, बुध-मेष, गुरू-मीन, शुक्र-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज भद्रा दिन 10:00 से रात्रि 20:45 तक रहेगी। पंचक सांय 6:43 से आरम्भ होंगे। आज वैशाखादि (बंगाल), माघ बिहु (आसाम) है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:41 से 9:16 तक, चर 12:27 से 2:02 तक, लाभ-अमृत 2:02 से 5:12 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:07, सूर्यास्त 6:47

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

सिंह
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

धनु
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

तुला
परिवार के कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक विवादों से राहत मिल सकती है।

कुंभ
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। व्यक्तिगत पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

कर्क
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

मीन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

विद्यालय में विज्ञान संकाय नहीं, मजबूरन कला या वाणिज्य में प्रवेश ले रहे हैं विद्यार्थी

मंड्रेला, (निसं)। कोरोना महामारी के बाद में देश में विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति को लेकर मांग उठने लगी हैं। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों में कला और वाणिज्य संकाय के अतिरिक्त कोई संकाय नहीं होने से आज भी प्रतिभाओं को अपनी प्रतिभा छोड़कर मजबूरी में कला या वाणिज्य संकाय लेना पड़ रहा हैं। इससे छात्रों का विज्ञान के क्षेत्र जाने का सपना अधूरा ही रह रहा है।

करीब बीस हजार की आबादी के मंड्रेला गांव में आस-पास के दर्जनों गांवों के विद्यार्थी भी पढ़ने आते हैं। मंड्रेला गांव के लाठ राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय व राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में विज्ञान संकाय नहीं होने की वजह से हर वर्ष पढ़ाई को लेकर छात्र-छात्राओं तथा अभिभावकों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इन दोनों विद्यालयों के स्थापित हुए कई वर्ष बीत जाने के बाद भी केवल कला संकाय या वाणिज्य ही संचालित हो रहा है। इसको लेकर ठाामवासियों ने कई बार विज्ञान संकाय खोलने की मांग की हैं। मगर हर बार जनप्रतिनिधि केवल आश्वासन ही दे रहे हैं।

मंड्रेला स्थित लाठ राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय और राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में विज्ञान संकाय नहीं होने की वजह से गांव के बालक-बालिकाओं का विज्ञान की पढ़ाई करना मात्र एक सपना बनकर रह गया है। इस दोनों विद्यालय में कई वर्षों से केवल कला और वाणिज्य संकाय ही संचालित हो रहा है।

मंड्रेला की राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में इस वर्ष 10वीं में कुल 69 छात्राएं नामांकित हैं। वहीं पिलानी रोड स्थित लाठ राजकीय विद्यालय में 67 छात्र-छात्राएं वर्तमान में अध्ययनरत हैं। साथ ही अन्य विद्यालयों में भी बड़ी संख्या में छात्राएं अध्ययनरत हैं। ऐसे में इन छात्राओं को कला या वाणिज्य संकाय की पढ़ाई करने के अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं होता हैं। ऐसे में मन मारकर प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को कला या वाणिज्य संकाय में ही प्रवेश लेना पड़ता है। मंड्रेला के राजकीय विद्यालयों में कक्षा 9 से 12वीं तक 550 के करीब छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं। 10वीं कक्षा के बाद इन छात्र-छात्राओं को मजबूरी में कला या वाणिज्य संकाय लेकर पढ़ाई करना पड़ रहा हैं। बालिकाओं के अभिभावकों ने बताया कि विज्ञान संकाय नहीं होने से होनहार बालिकाओं को आगे बढ़ने का उचित अवसर नहीं मिल रहा हैं। मंड्रेला के राजकीय विद्यालयों में लंबे समय से विज्ञान संकाय खोलने की मांग कर रहे हैं। लेकिन सुनवाई नहीं की जा रही हैं। उल्लेखनीय है मंड्रेला की राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय 1962 से संचालित है। किंतु आज इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी बालिकाओं के इंजीनियर और डॉक्टर बनने के सपने अधूरे है। इधर, मंड्रेला के पिलानी रोड स्थित लाठ सीनियर सैकंडरी स्कूल जो कि वर्तमान में राजकीय लाठ उच्च माध्यमिक विद्यालय के नाम से जाना जाता है। इसकी स्थापना सन 1942 में लाठ परिवार द्वारा की गई थी। जिसके बाद इसे एक अनुदानित संस्था का रूप मिला। ऐसी संस्थान जिसका सरकार और भामाशाह मिलकर संचालन कर रहे हो। आजादी के उस दौर से सन 1982 तक जब तक स्कूल को भामाशाह और सरकार मिलकर चला रहे। तब तक विद्यार्थियों के इंजीनियर और डॉक्टर बनने के सपने को उड़ान मिल रही थी। लेकिन 1982 के बाद इसे पूर्ण रूप से सरकार को सुपुर्द किया गया। जिसके बाद सरकार द्वारा विद्यालय में विज्ञान संकाय हटा दी गई। जिससे विद्यार्थियों के इंजीनियर और डॉक्टर बनने के सपने,सपने ही रह गए।

■ मंड्रेला के सरकारी स्कूलों में विज्ञान संकाय नहीं होने से छात्र-छात्राओं को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है

ओमप्रकाश सोनी, अध्यक्ष, भाजपा ग्रामीण मंडल, मंड्रेला का कहना है कि मंड्रेला गांव के राजकीय विद्यालयों में विज्ञान संकाय नहीं होने की वजह से गांव की बेटियां शिक्षा को यहीं विराम दे रही हैं। इसलिए प्रदेश की सरकार से मेरा अनुरोध है कि स्थानीय गांव में विज्ञान संकाय खोला जाए। ताकि कोई भी बेटी विज्ञान की शिक्षा से वांछित नहीं रहे। हमारे क्षेत्र की बेटियां इतनीं होनहार है कि नाशा तक अपनी सेवाएं दे रही है।

कुलदीप सिंह शेखावत, सरपंच, मंड्रेला का कहना है कि मंड्रेला गांव में सैंकड़ों विद्यार्थी अध्यनरत है। उनका सपना होता हैं कि हम बड़े होकर डॉक्टर बनेंगे। लेकिन स्थानीय गांव में राजकीय विद्यालयों में विज्ञान संकाय नहीं होने की वजह हर साल सैंकड़ों विद्यार्थियों के सपने अधूरे रह जाते हैं। सरकार को इस और कदम उठाना चाहिए।

सीए अंजली गौरव मित्तल का कहना है कि मेरी बचपन में इच्छा थी कि मैं बड़ी होकर डॉक्टर बनूंगी। लेकिन मेरे गांव में विज्ञान संकाय नहीं होने की वजह से मुझे वाणिज्य संकाय की ही पढ़ाई करनी पड़ी। सरकार से मेरा करबद्ध अनुरोध हैं कि मंड्रेला में भी विज्ञान संकाय खोला जाए। ताकि किसी भी बालिका का सपना धूमिल ना हो।

मंड्रेला का सरकारी स्कूल, जहां पर विज्ञान संकाय नहीं है।